अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

"वर्ण व्यवस्था एवं जाती प्रथा का ऐतिहासिक विश्लेषण "

Dr. Nilima Ojha
Asst. Prof. IEC college, Greater Noida, 201310

इतिहासकारों के अनुसार प्राचीन भारतीय समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित था जो समाज श्रृंखला का अभिन्न अंग थी। ऋग्वेद के पुरुषसूक्त के दसवें मंडल के अनुसार प्राचीन भारतीय समाज चार वर्णों में विभक्त था ,यह वर्ण थे- ब्राह्मण,क्षत्रिय ,वैश्य तथा शूद्र।पहले तीन को द्विज कहा गया,क्योंकि उनका उपनयन संस्कार होता था।

वर्ण का शाब्दिक अर्थ रंग है, परंतु उसकी धारणा धर्म से जुड़ी है और वह धर्म संस्कारों से जुड़ा है। संस्कार 16 हैं और वह कर्मों या कार्यों के माध्यम से धर्म की स्थापना में सहायता करते हैं। यहां धर्म का अर्थ नैतिक आदर्श है जो की एक समाज के निर्माण की नींव रखता है। इस प्रकार वर्णधर्म सामाजिक न्याय की स्थापना करता है। सभी संस्कारों को करने के लिए आश्रम की व्यवस्था है जो चार हैं,ब्रह्मचर्य , गृहस्थ , वानप्रस्थ और सन्यास और ये कर्म के सिद्धांत पर आधारित हैं और इन सब को मिलाकर वर्णाश्रमधर्म कहा जाता है।

आश्रम व्यवस्था प्रथम दो वर्गों अर्थात ब्राह्मण और क्षत्रिय के लिए आवश्यक होती थी। वैश्यों के लिए एच्छिक और शूद्रों के लिए निषिद्ध थी।

ऋगवैदिक काल में वर्ण परिवर्तन हो सकता था क्योंकि वर्ण कर्म पर आधारित थे,जैसे; विश्वामित्र ने अपने तप से क्षत्रिय से ब्राह्मण बनकर दिखाया था।

उत्तर वैदिक काल में वर्णाश्रम धर्म में कठोरता आ गई। कोई भी व्यक्ति अपने वर्ण को अपने जीवन काल में नहीं बदल सकता था। वर्ण के सदस्य अपने वर्ण के बाहर विवाह नहीं कर सकते थे या भोजन स्वीकार नहीं कर सकते थे। नीचे के वर्णों की तरफ कुलीनता काफी आसान थी और ऊपर के वर्णों में गतिशीलता अधिक कठिन थी । यहाँ वर्णसंकर या मिश्रित जाति का सिद्धांत सामने आया जिसे मनु जैसे मानक धर्म शास्त्रों में अशुद्ध माना गया है। सामान्य विवाह न होने पर वर्णसंकर जातियों का पदुर्भाव हुआ। ऋषि गौतम के अनुसार आवश्यकता पड़ने पर अनुलोम विवाह अर्थात पुरुष द्वारा एक वर्ण नीचे की कन्या से विवाह तथा प्रतिलोम विवाह अर्थात पुरुष द्वारा उच्च वर्गीय स्त्री से विवाह करने की अनुमति प्रदान की गई है।(1)

परंतु इस प्रकार के विवाह के फलस्वरूप उत्पन्न संतान विशुद्ध वर्गीय ना होकर विशिष्ट जाति या वर्णसंकर के अंतर्गत सम्मिलित थी।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

सूत्रकाल के आचार्यों ने विभिन्न वर्णसंकरो का उल्लेख किया है, जैसे;

अम्म्ष्ठ (2) , आयोगव(3) , उग्र,क्षत , चाण्डाल , निषाद , मागध, रथकार,सूत आदि।

महाभारत में 152 वर्णसंकर जातियों का उल्लेख मिलता है। जैसे निषाद, उग्र , वैदेहक ,मागध,आयोगव, एवं सूत आदि जातियां।(4)

मनुस्मृति में वर्णसंकरों पर व्यापक विमर्श मिलता है। मनुस्मृति के अनुसार वर्णसंकर विवाहों के बाहुल्य का कारण 'परधर्मनुशीलन' या दूसरे वर्ण के कर्मों का अनुसरण करना था। मनुस्मृति में वर्णसंकर जातियों का उल्लेख है जैसे; निषाद, चांडाल, क्षत, आयोगव तथा मागध आदि।

प्रत्येक जाति का एक परंपरागत या निश्चित व्यवसाय होता था जो पीढ़ी- दर -पीढ़ी हस्तांतरित होता था। कुछ परिस्थितियों में जब व्यक्ति अपना व्यवसाय बदल लेता था, जिसकी अनुमति थी तो उपजाति का उदय होता था। इस प्रकार अनेक उपजातियों का उदय हुआ।

जाति का उपविभाजन अगर देखे तो जैसे राजपूत जातियां थी; सूर्यवंशी चंद्रवंशी, नागवंशी और अग्नि वंशी वही उनकी उपजातियां देखे तो सूर्यवंशी फिर से विभक्त हो जाते हैं; गहलोत ,कछावा और राठौर में, आदि।

इतिहासकारों की दृष्टि में वर्तमान समाज में जिन उपजातियों का अस्तित्व है, उन सब का उदय राजपूत युग में हुआ था।

वर्ण व्यवस्था में आए परिवर्तनों और जाति प्रथा की कुरीतियों ने समाज में भेदभाव बढ़ा दिया। धार्मिक आंदोलनों द्वारा इनका कट्टर विरोध हुआ। जैसे;बुद्ध और महावीर ने इसके विरुद्ध असरकारक अभियान चलाया था, जो इतिहास में विदित है।

मौर्यकाल में जाति के विरुद्ध एक शासकीय अभियान भी चला ,चंद्रगुप्त मौर्य और सम्राट अशोक द्वारा । उत्तर मौर्य काल में हर्षवर्धन तक इतिहासकारों के अनुसार जाति व्यवस्था बढ़ चढ़ गई। हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात भारत छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया, जहां अधिकांश राजपूत शासक थे। उन्होंने ब्राह्मणों और मंदिरों को भारी चंदा और भूमि अनुदान दिया। यहां फिर से वर्ण व्यवस्था कठोर होने लगी। इस काल में युद्ध एवं राजनीतिक स्थिरता के कारण बड़ी संख्या में समाज में नई जातियां -उपजातियों का उदय हुआ।वहीं व्यावसायिक श्रेणियों को जाति और उपजाति समझा जाने लगा। जैसे लोहार,बढई, मछुआरे ,ग्वाले आदि।

मुसलमानों के आने के पूर्व ही जातीय नियमों में कठोरता आ चुकी थी। भारत में मुस्लिम साम्राज्य का वर्चस्व लगभग ₹1192 ईस्वी में हुआ। यद्यपि सातवीं सदी से ही भारत पर मुस्लिम शासको के आक्रमण शुरू हो गए थे। इस काल में इस्लाम ने शासन के सहयोग से भारत में पर्याप्त

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

प्रभाव स्थापित कर लिया था।इस्लाम धर्म में छुआछूत का अभाव था जबकि हिंदू धर्म में छुआछूत कट्टर रूप से विद्यमान थी। इसे अपने लिए अवसर समझ कर इस्लाम प्रचारकों ने हिंदू धर्म से छुटकारे का आंदोलन चलाया, जिसके परिणाम स्वरुप हिंदुओं में विशेषकर निम्न जाति के लोग व्यापक स्तर पर इस्लाम स्वीकार करने लगे। ब्राह्मणों ने इसे रोकने के लिए जातीय बंधनो को और भी कठोर बना दिया, लेकिन इसका भी विपरीत परिणाम ही निकला।

स्वतंत्रताकाल में अनेक समाज सुधारकों और राष्ट्रीय नेताओ ने अपने आंदोलन के माध्यम से सामाजिक विकास का प्रयास किया। इनमें प्रमुख थे राजा राममोहन राय, रवींद्रनाथ टैगोर ,केशव चंद्र सेन ,स्वामी विवेकानंद, ज्योतिबा फुले,स्वामी श्रद्धानंद,महात्मा गांधी, पं जवाहरलाल नेहरू ,डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ,राम मनोहर लोहिया, और सरदार पटेल आदि।

स्वतंत्त्रोर काल में भारतीय समाज में जाति व्यवस्था का एक नया स्वरूप विकसित हुआ जैसे ;जातीय गुट,जातीय दबाव , जातिवाद आदि। जातियाँ जाति गुट के आधार पर राजनीति को प्रभावित करने लगीं । इसके परिणामस्वरुप विभिन्न जातीयसंघ एवं महासंगों का जन्म हुआ। उच्च पदासीन व्यक्ति नियुक्तियों और पदोन्नति में जातिय भेदभाव करने लगे। परिणामस्वरुप जातिवाद का एक विकृत चेहरा सामने आया। वर्तमान समय में यह प्रक्रिया हर स्थान पर देखने को मिलती है। वहीं आम लोगों में राजनीतिक शक्ति आ जाने के कारण अब जातियां दबाव समूह के रूप में काम करने लगी हैं एवं अपने हित एवं शक्ति के लिए अपने मत की सौदेबाजी कर रहीं हैं।

परवर्तीकाल में उत्पन्न हुई वर्ण व्यवस्था की विशषमताओं एवं जाति व्यवस्था की विकृतियों कि निश्चय ही निंदा होनी चाहिए, परंतु बलात् इसका उत्तरदाई इन व्यवस्थाओं को नहीं बनाया जा सकता क्योंकि इतिहास साक्षी है, कि इन संस्थाओं ने बुरे परिवर्तनों की ही तरह अच्छे बदलावों को भी अंगीकार किया है और सामाजिक संगठन विकास की ओर अग्रसर हुआ है।अब यहां केवल व्यक्तिगत सोच /अवधारणाएं /मानसिकता को बदलकर सामाजिक विकास को लक्ष्य बनाने,वैश्विक भाईचारे पर काम करने की जरूरत है। हमारी संस्थाएं इस बदलाव को खुद आत्मसात कर लेंगी और समाज विकसित होगा।अर्थात् इतिहास से सीख लें और विकास की ओर अग्रसर हों।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

संदर्भ सूची;

1)गौतम धर्मशास्त्र 4.20

2) गौतम धर्मशास्त्र 4.14

3) बौधायन धर्मशास्त्र 1.9.7

4), महाभारत अनुशासन पर्व 13.48

5)आर.भूषण एंसिएंट इंडियन हिस्ट्री श्री पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2010

6)एस.गुप्ता भारत में जाति व्यवस्था ,यूनिवर्सिटी पब्लिकेशनएवं नई दिल्ली, 2011